पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य

डॉ मन्जु तोमर
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
एम डी एस डी गर्लज कॉलेज, अम्बाला सिटी

पत्रकारिता और साहित्य एक दूसरे के पूरक है। पत्रकारिता साहित्य को पाठक वर्ग तक पहुँचाने का सबल माध्यम है और साहित्य पत्रकारिता को अधिक संवेदनायुक्त बनाकर प्रभावशाली बनाने में सहायक है। यह सत्य है कि साहित्य की उत्पत्ति पत्रकारिता से पूर्व हुई है, किन्तु यदि हम साहित्य के विकास पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट हो जाता है कि पत्रकारिता के उदभव के पश्चात् ही साहित्य के प्रचार - प्रसार में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। पत्र-पत्रिकाओं की साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साहित्य एवं पत्रकारिता का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध इतिहास सिद्ध है। साहित्य सदा से समाज का मार्गदर्शन कर उसे सही दिशा प्रदान करता रहा है, तथा समाज की अच्छाईयों व बुराईयों को विभिन्न रूपों में चित्रित करता रहा है। इसी आधार पर साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। दूसरी ओर समाचार-पत्र पत्रकारिता की देन एवं महत्वपूर्ण अंग है, जो समाज के विभिन्न भागों से सूचनाएं एकत्रित कर पुनः समाज तक पहुँचाने का कार्य करते हैं, समाज जागरूक होता रहता है।

वर्तमान युग में समाचार - पत्र संप्रेषण का सशक्त माध्यम हैं। ये न सिर्फ नए विचारों एवं आन्दोलनों को जन्म देते है वरन यह विभिन्न विषयों के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर उसे प्रभावशील भी बनाते हैं। समाचार-पत्रों से पाठक का मानसिक विकास होता है, जिज्ञासा शांत होती है और शान पिपासा भी बढ़ती है। यदि यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहोगी कि जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होते हैं, उसी प्रकार समाचार-पत्रों से भी दिशा प्राप्त कर समाज अपनी छवि को निर्धारित करता है तथा संवारता है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समाचार-पत्र का क्षेत्र अत्यन्तव्यापक हो गया है। जैसे-जैसे साक्षरता में वृद्धि हो रही है, समाचार-पत्रों का दायरा भी फैलता जा रहा है। समाचार-पत्रों के उद्भव से पूर्व लिखने-पढ़ने का सम्बन्ध साहित्य से माना जाता था। लेखन से तात्पर्य कविया साहित्यकार से किया जाता था, किन्तु कालातर में समाचार-पत्रों में लेखन कार्य करने वाले को पत्रकार कहा गया । यह समरूपता संकेत देती है कि पत्रकारिता का साहित्य से अपने जन्म काल से सम्बन्ध रहा है। यह सम्बन्ध दिनो-दिन गहरा होता गया है। पत्रकारिता और जन-संचार की विकासात्मक अवधारणा से प्रभावित होकर यह कहा जाने लगा है कि पत्रकारिता को भी साहित्य की भाति रचनात्मक और सकारात्मक माना जाए तथा इसका सम्बन्ध संस्कृति के सभी पहलुओं से जोड़ा जाए। ऐसा इसलिए कि साहित्य समाज की घटनाओं को चित्रित करता है और इस चित्र को समाजतक पहुचाने के लिए साहित्य को पत्रकारिता के सम्बल की आवश्यकता होती है। समाचार-पत्र व पत्रिकाएं ही साहित्य को समाज के उस वर्ग तक पहुचा सकते हैं, जहां पहुंचकर समाज साहित्य से प्रभावित हो सके तथा समाज में वांछित परिवर्तन की संभावना बन सके ।

आज प्रत्येक पत्र-पत्रिका में साहित्य के लिए कुछ-न-कुछ स्थान सुरक्षित है किन्तु जब तक यह कुछ-न-कुछ बहुत कुछ न बन जाए, तब तक साहित्य को अपने उद्देश्य तक पहुंचने में कठिनाई होगी। समाचार-पत्र भी साहित्य को सामान्य जन तक पहुचाकर उसमें साहित्य के प्रति रूचि, जागरूकता एवं चेतना पैदा कर सकते है, जो वास्तव में पत्रकारिता के उद्देश्य भी है। यद्यपि आज प्रतिष्ठित समाचार-पत्रों की मुख्य धारा में साहित्य हेतु उचित प्रोत्साहन का अभाव दिखाई दे रहा है, किन्तु फिर भी आज का साहित्यकार स्वयं को कहीं-न-कहीं पत्रकारिता सेजुड़ा अनुभव कर रहा है। अपने अरूणोदय काल से ही पत्रकारिता के सभी प्रकाशनों का उद्देश्य जन-जागरण कर अंधविश्वासों व कुरीतियों को दूर कर समाज सुधार करना तथा जन - कल्याण करना रहा है । यह और बात है कि समय के अनुसार समाज-सुधार या जन-कल्याण का स्वरूप परिवतत होता आ रहा है। किन्तु सत्य यही है कि हर समय जन-जागरण एवं जन - कल्याण हेतु पत्रकार व साहित्यकार कलम उठाते रहे है तथा तन, मन, धन से इसमें सहयोग भी देते रहे हैं । यह कहा जाता है कि साहित्य व पत्रकारिता दोनो का आधार शब्द है और यह भी माना जाता है कि पत्रकारिता शीघ्रता में लिखा गया साहित्य है । पत्रकारिता तथ्य या यर्थाथ पर निर्भर करती है और जन शक्ति भी पत्रकारिता के तथ्य को समझ कर उस पर विश्वास करती है ।

इसका परिणाम साहित्य की तुलना में शोध एवं साकार रूप में परिलक्षित होता है, किन्तु वास्तविकता यह है कि पत्रकार द्वारा

ISBN: 978-81-954645-0-0

लिया गया आलेख रचनात्मक क्षणों में से तपकर निकलने की स्थिति में साहित्य की रचनात्मकता प्राप्त कर लेता है। साहित्य की विधाओं को भी पत्र-पत्रिकाओं की सामग्री के रूप में जाना जाता है। ये समाज के लिए आवश्यकहोने के साथ-साथ, पत्र-पत्रिका के रूप को निखारने का कार्य करती है। किसी समाचार-पत्र की सफलता व असफलता में उसकी विषय-सामग्री की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अच्छे स्तर की विषय-सामग्री जहां किसी समाचार-पत्र को विकास की ऊचाईयों तक पहुंचा सकती है, वहीं घटिया व निम्न प्रकार की सामग्री उसे बुरी तरह प्रभावित भी कर सकती है। अच्छे-बुरे की परिभाषा व्यक्ति, समाज, संस्कृति व परिवेश के आधार पर भिन्न-भिन्न हो सकती है, किन्तु कही-न-कही इस अच्छे बुरे का साधारणीकरण तथा सामान्यीकरण भी होता है ।

भारतेन्दु युग, पत्रकारिता ही नही, साहित्य की दृष्टि से भी स्वर्णिम युग रहा। हिन्दी में साहित्यकार एवं पत्रकार एक - दूसरे के गुणों से युक्त दिखाई दिए। देश को विकास के लिए एक सरल भाषा की आवश्यकता इस युग में पूर्ण हुई। डा . रामविलास शर्मा ने इस युग के विषय में लिखा है कि पत्र-साहित्य की परम्परा न होते हुए भी उसने थोड़े से वर्षों में जो उन्नति की, उसका एक मात्र कारण लेखको की धुन थी। परिस्थितियों कठोर थीकिन्तु उन्होंने अपने को दृढ़तर सिद्ध किया। यदि उस युग के साहित्यकारों ने यह लगन और फकड़ पन न प्रकट किया होता तो निश्चय ही, वहीं परिस्थितियों के नीचे कुचल दिए गए होते। 'बीसवीं शताब्दी के आरंभ को हिन्दी पत्रकारिता का तीसरा दौर माना जाता है । यह दौर लार्ड कर्जन के दुष्कृत्यों के लिए प्रसिद्ध है। बंगाल की शक्ति से परिचित कर्जन ने राष्ट्रीय शक्ति को तोड़ने के लिए बंगाल को ही तोड़ दिया। किन्तु इस दमन कार्य का उल्टा असर हुआ। सम्पूर्ण भारत ने बंगाल के प्रश्न के साथ जोड़कर इस आंदोलन को ज्यादा गहरा रंग दे दिया। स्वदेशी आंदोलन तेजी पकड़ने लगा। रविन्द्रनाथ ठाकुर ने अंग्रेजी शिक्षा का खुलकर विरोध किया और जातीय शिक्षा संस्थान के रूप में विश्वभारती की स्थापना की।

1913 में प्रकाशित 'प्रताप के माध्यम से श्री गणेश शंकर स्वतन्त्रता संग्राम एवं पत्रकारिता जगत के लिए जो योगदान दिया यह अविस्मरणीय है। प्रताप कार्यालय ही भगतसिंह आजाद, विरिमल जैसे कातिकारी नेताओं काप्रेरणास्थल बना । उन दिनों अंग्रेजों का दमन पलता रहा और गणेश जी की लेखनी आग उगलती रही एक भारतीय आत्मा के नाम से लोकप्रिय श्री माखनलाल चतुदीने 1925 में जबलपुर से कमवीर 'साप्ताहिक निकाला, जिसने पत्रकारिता केक्षेत्र में नये आयाम स्थापित किए। उनकी पत्रकारिता ने आत्मशोध व अपराजयकी भावना को जन - जन में भरा और प्रांत में लेखको, कवियों और पत्रकारों कीजो पीढ़ी तैयार की, उसकी समस्त अनुभूतिया , कल्पना अभिव्यंजनाएं निरंतर आगसे नहाती रही।

द्विवेदी युग में सरस्वती के अलावा कुछ अच्छे साहित्यिक पत्र भी निकले , जिसमें हितयात , सारस्वत सर्वस्व', देवनागर' , 'इन्दु मर्यादा' , 'प्रभा ' और 'पाटलीपुर प्रमुख थे। प्रसाद की इन्दु ने छयावादी कविता को जन्म दिया। मालवीय जी की मर्यादा ने हिन्दू विश्वविद्यालय की परिकल्पना प्रदान की । 1920 तक हिन्दी पत्रकारिता अबोध शैशवावस्था व बचपन की चंचलता को त्याग यौवन की दमक प्राप्त कर गई। इस युग में पत्रकारिता जगतमें विषय वैविध्य भी दिखाई दिया तथा भाषा भी संस्कारित व परिमार्जित हुई। पत्रकारों की निर्भिकता व पत्र-पत्रिकाओं का राष्ट्रीय विस्तार भी इसी युग की देन रही। गांधी जी के राजनीति में प्रवेश से हिन्दी पत्रकारिता को एक नई दिशा मिली। 1920 से 1947 तक के समय गांधीजी के अमूल्य योगदान के फलस्वरूप गांधी युग की प्रसंशा प्राप्त हुई। महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश का स्वतन्त्रता संग्राम एक नये रूप में संगठित हुआ। गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम व असहयोग आंदोलन में तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के लक्ष्य को गांधीजी ने पत्रकारिता व हिन्दी के द्वारा जन - जन तक पंहुचाया। गांधी जी राजनीतिक विचारक के साथ-साथ समाज सुधारक , गंभीर लेखक पत्रकार भी थे । उन्होंने 'यंग इंडिया' , 'नवजीवन ' , हिन्दी तथा गुजराती साप्ताहिक 'हरिजन', 'हरिजन सेवक' जैसे पत्रों का कुशल सम्पादन किया। इन पत्रों का एक - एक शब्द भारतीय युवाओं के लिए आदर्श बन गया। इन पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित नहीं होते थे, क्योंकि गांधी जी की दृष्टि में विज्ञापन , पत्रों कीस्वतन्त्रता के मार्ग में बाधा थे। गांधी जी पत्रकारिता में स्वतन्त्रलेखन के पक्षधर थे । इसी स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों के रोलेट एक्ट की परवाह न करते हुए। प्रेस रजिस्ट्रार कार्यालय से बिना पंजीकरण कराए, 7 अप्रैल 1919 को बम्बई से साप्ताहिक सत्याग्रह का प्रकाशन आरम्भ किया । श्रीरामनारायण चौधरी ने गांधीयुग के संदर्भ में लिखा है कि गांधी युग के दौरान अधिकांश समाचार-पत्र राष्ट्रीयता की भावना से भरपूर निकलने लगे थे । गांधी जी की नैतिक प्रेरणा और उनके स्वयं

के प्रभाव से उक्त पत्रकारों ने अपने लिए आचार संहिता भी स्वयं निर्धारित कर ली थी । " गांधी युगीन पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना का अलख जगाया एवं उनके सिद्धान्तों एवं आदर्शो स प्रेरित होकर भारत में नवीन चेतना का स्वर मुखरित किया। इस युग ने जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पंत एवं महादेवी वर्माके रूप में ऐसे महान कवि दिए, जिनसे हिन्दी-साहित्य उन्नत व समृद्ध हुआ। माखन लाल चतुर्वेदी, जैनेन्द्र व प्रेमचन्द पर भी गांधी दर्शन कास्पष्ट प्रभाव दिखाई दिया।

1920 से 1947 तक हिन्दी पत्रकारिता की भाषासमर्पण और विनय की अभिव्यक्ति न रहकर आग और शोलों से भरी हुई कथा बन गई। इस युग में बवंडर', बोल दे धावा, रणभेरी, "भूमिपत्र', "ठिका ", "रणडंका", "शंखनाद", "ज्वालामुखी', "तूफान जैसे उग्रपत्र प्रदान किए। जिनसे वास्तव में स्वतन्त्रता - संघर्ष का शंखनाद हो गया। सुभद्रा कुमारी चौहान , सियाराम शरण गुप्त गुलाबराय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, भगवती चरण वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त , रामवृक्ष बेनीपुरी , पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, सच्चिदानन्द, हीरा नन्द वात्स्यायन अज्ञेय, मुक्तिबोध जैसे महान साहित्यकारों को अभिव्यक्ति का अवसर इसी युग की पत्रकारिता ने दिया ।

सुझाव :

समाचार पत्र मानव मूल्यों कीपुर्नस्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यदि साहित्य की सभीविधाओं का प्रकाशन समाचार-पत्रों में एक निश्चित समय पर होता रहे , तो इससे साहित्य की लोकप्रियता में वृद्धि भी होगी और पाठको कीसाहित्य समझ भी व्यापक होगी। वर्तमान में श्रेष्ठ साहित्य लेखन के अभाव कोप्राचीन व स्थापित साहित्यिकारों के साहित्य-प्रकाशन द्वारा दूर किया जासकता है। सम्पादको द्वारा साहित्य के लिए समाचार - पत्रों में एक निश्चितस्थान तय करना जनहित के लिए एक अच्छा प्रयास होगा। साहित्य-प्रकाशन हेतु निष्पक्ष चयन एवं साहित्य-चयन में विचार के साथ-साथ शैली को भीमहत्व देना साहित्य के स्तर को सुधारने में सहायक होगा। श्रेष्ठ व्यंग्यसाहित्य का प्रकाशन समाचार - पत्रों की पाठक संख्या में वृद्धि भी करेगा तथा समाज की विसंगतियों को दर्शाने का सशक्त माध्यम भी होगा ।

आकर्षक ढंग से देश-भक्ति पूर्ण साहित्य का प्रकाशन आज के युवा वर्ग को भविष्य-निर्माण में प्रेरणा प्रदान करेगा। आज समाचार-पत्र जन सामान्य के लिए संचार का एक सुलभ साधन है। अत: समाचार-पत्रों के माध्यम से हिन्दी भाषा के प्रचलन एवं उत्थान का प्रयास निश्चित रूप से सुखद परिणाम देगा। हिन्दी भाषा की लोकप्रियता के लिए भाषा की सरलता के साथ उसके स्तर को सुरक्षित रखना समाचार-पत्रों का महत्वपूर्ण दायित्व है। आंचलिक संस्कृति के मूलभूत स्वर को समाचार-पत्रों में साहित्य-प्रकाशन के माध्यम से सफलतापूर्वक व्यक्त किया जा सकता है ।

पाठकीय चेतना को संस्कारित एवं परिष्कृत करने के लिए समाचार-पत्रों में नियमित साहित्य-प्रकाशन अति आवश्यक है। समाचार-पत्रों द्वारा प्रतिदिन साहित्य हेतु एक पृष्ठ को आरक्षित रखना आरम्भ में व्यवसायिक दृष्टि से जोखिम भरा हो सकता है। किन्तु कालान्तर में निश्चित रूप से इसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। समाचार-पत्रों को चाहिए कि वे राजनीति एवं अपराधसे प्रेरित साहित्य के स्थान पर जीवन मूल्य एवं व्यक्ति्व का विकास करनेवाले लेखों का प्रकाशन करें । प्रतिदिन सामाजिक संदर्भो से जुड़े साहित्य-प्रकाशन से जन मानस में साहित्य के प्रति अपेक्षित परिष्कार संभव है। विभिन्न भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य का अनूदित रूप में प्रकाशन समाचार-पत्रों का एक अच्छा प्रयास हो सकता है। समाज में साहित्य के प्रति उत्पन्न हुई अरूचि को रोचक, आकर्षक साहित्य द्वारा मिटाने का प्रयास किया जाना चाहिए। प्राधीन एवं अमर साहित्य का पुन:-पुन: प्रकाशन पाठको में साहित्य चातना जागृत करने में सहायक होगा ।